om 6 delhi 1 A B C_Page 1 and 2 16/06/2015 17:40 Page 4

कलायत-हरियाणा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् थानाधिकारी महावीर सिंह सिन्धु को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपक,मा.आबू। साथ हैं ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. कविता व अन्य।

गिदड़वाहा-पंजाब। नवनिर्मित 'सुखधाम भवन' के 'हैप्पी हॉल' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. अमीर चन्द। साथ हैं ब्र.कु. प्रेम, ब्र.कु. कैलाश, ब्र.कु. सुदेश, ब्र.कु. शीला व ब्र.कु. रजनी।

डाकपत्थर-उत्तराखण्ड। ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में कथावाचक स्वाति देवी, ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. राम आसरे तथा अन्य।

मऊ-उ.प्र.। किसान मेले में आयोजित ग्राम विकास प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए सब्जी अनुसंधान केन्द्र निदेशक डॉ. जे.एम. कल्लू, बीज अनुसंधान निदेशक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. रविन्द्र, डॉ. हरदेव व ब्र.कु. विमला।

ठठिया-कन्नौज(उ.प्र.)। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान शिव ध्वजारोहण करते हुए ग्राम प्रधान बड्डू कुशवाहा। साथ हैं ब्र.कु. रोशनी, ब्र.कु. रेनू तथा अन्य।

फाजिलका-पंजाब। ज्योति बी.एड.कॉलेज में 'जीवन में नैतिक शिक्षा का महत्व' कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में प्रबंधकीय कमेटी सदस्य सुरेन्द्र ठकराल, प्रो.सतपाल, डॉ.रोशनलाल, ब्र.कु.भगवान, ब्र.कु.प्रिया व अध्यापक गण।

जगदम्बा सरस्वती-स्मृति दिवस

विश्व कालचक्र में एक ऐसी घड़ी आई जब परमात्मा शिव ने सारे मानव जाति का पुनः दैवीकरण करने हेतु प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम में अवतरित होकर इस कार्य को अंजाम दिया। वो पल सचमुच कितनी दिव्यता व श्रेष्ठता भरा होगा जब सृष्टि के दैवीकरण की नींव परमात्मा ने डाली होगी। इसी सिलसिले में जब स्वयं निराकार शिव साकार माध्यम के द्वारा सारी मानवता को दैवीकरण का रूप देने के लिए विश्व की महान आत्माओं का चयन कर रहे थे, ऐसे में उनकी नज़र एक छोटी सी बालिका राधे पर पड़ी। और जब राधे ने भी यह समझा, निहारा तो उसमें वही पुनः दैवी स्मृति का उद्गम हुआ और वो विश्व के नव निर्माण के दायित्व को पुनः संभालने के लिए तत्पर हो गई। ये और कोई नहीं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की प्रथम प्रशासिका जगदम्बा सरस्वती ही थीं जो इस विद्यालय की अगुआ बनीं और सारे यज्ञवत्सों के पालना की बड़ी ज़िम्मेदारी व उत्तरदायित्व निभाया। वे पवित्रता व दिव्यता की मूर्ति बनीं। परमात्मा के आदेश व निर्देश का हूबहू सत् प्रतिशत पालन किया। उसी के परिणामस्वरूप इस विद्यालय की नींव में पवित्रता, दिव्यता, शांति और शक्ति ये चार पिल्लर इतने गहरे पड़े जो कि आज ये विद्यालय निर्विघ्न रूप से सारे विश्व में विश्व परिवर्तन का कार्य कर रहा है। ऐसी जगदम्बा सरस्वती की 24 जून की पुण्यतिथि पर हम सभी दिल से श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं और मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के सम्बन्ध में थोड़ी सी झलकियां प्रस्तुत कर रहे हैं।

श्रीमद् भगवद् गीता में कहा गया है कि परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से यज्ञ द्वारा सृष्टि रची। अनेक प्रकार के यज्ञों का उल्लेख करते हुए ये कहा गया है कि सब प्रकार के यज्ञों में से ज्ञान-यज्ञ श्रेष्ठ है। निःसंदेह श्रेष्ठ अर्थात् सतयुगी दैवी सृष्टि की रचना के लिए परमात्मा ने ज्ञान-यज्ञ की ही स्थापना की होगी। इसी बात को यों भी कहा जा सकता था कि परमात्मा ने ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना की परंतु ज्ञान शब्द के साथ यज्ञ शब्द को इसलिए जोड़ा गया क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान सुनने वाले लोग काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की तथा तन-मन-धन आदि की ज्ञान-यज्ञ में आहुतियां देते हैं। यदि आहुतियां न दी जाएं तो ज्ञान को यज्ञ की संज्ञा नहीं दी जा सकती। यज्ञ वो है जिसमें कुछ न कुछ दिया जाता है। इसलिए ज्ञान-यज्ञ शब्द विश्वविद्यालय शब्द से अधिक महत्वपूर्ण है।

सरस्वती का जन्म कैसे हुआ?

यज्ञ के प्रसंग में ये कहा जाता है कि महाभारत में वर्णित द्रौपदी का जन्म भी यज्ञ से हुआ था इसलिए द्रौपदी को यज्ञसैनी भी कहा जाता है। इसी प्रकार विद्या की देवी सरस्वती का जन्म भी यज्ञ से हुआ माना जाता है। सोचने की बात है कि अग्निकुंड वाले यज्ञ से तो किसी मानवीय देहधारी का जन्म हो ही नहीं सकता क्योंकि अग्नि तो शरीर को जला देती है। ज्ञान रूपी अग्नि ऐसी अग्नि है, जो शरीर को भस्म नहीं करती। इससे शरीर का लौकिक जन्म तो नहीं होता परंतु इससे संस्कार और स्वभाव पवित्र हो जाते हैं और उनके शुद्धिकरण करने से नया मानवीय जीवन आरम्भ होता है। उसे मरजीवा जन्म कहा जाता है। इसे अलौकिक अथवा दूसरा जन्म भी कहा जाता है। ब्राह्मणों को भी द्विज इसलिए कहा जाता है (द्विज, जिसका दूसरा जन्म होता है) क्योंकि ज्ञान द्वारा दूसरा जन्म होता है। इसी तरह ही जगदम्बा सरस्वती का भी जन्म हुआ। इसका भाव ये है कि परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ज्ञानशाला की स्थापना की। अतः वहां ज्ञान से उनको नया जन्म मिला। शारीरिक रूप से तो पहले ही से वे निर्मल थीं, परंतु ज्ञान द्वारा उनके मन, वचन और कर्म निर्मल अथवा कमल समान बने। इसलिए चित्रकार उन्हें कमल-पुष्प पर आसीन दिखाते हैं। परंतु आज कोई भी विद्वान ये नहीं बता सकता कि ज्ञान की देवी सरस्वती का जन्म कैसे हुआ और प्रजापिता ब्रह्मा से उनका क्या संबंध है।

ज्ञान-यज्ञ की रचना करने वाले ब्रह्मा ही को यज्ञ-पिता कहा जाता है, जिन्होंने उस ज्ञान से नया जीवन बनाया, उन्हें ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियां कहते हैं। इस दृष्टिकोण से सरस्वती भी ब्रह्माकुमारी ही थी शास्त्रों में इसका गायन है।

मन-बुद्धि इत्यादि की बलि देने के कारण काली

ज्ञान-यज्ञ में ब्रह्माकुमारों और ब्रह्माकुमारियों ने विकारों की आहुतियां डाली थीं और यथाशक्ति अपना तन-मन-धन दिया था। उससे ही वो यज्ञ चलता रहा और उससे अन्य ब्रह्माकुमारियां और ब्रह्माकुमार प्रगट होते रहे। तब वे नए ब्रह्मा-वत्स भी अपनी आहुतियां डालते रहे। तन और धन की आहुति डालना तो फिर भी सहज होता है परंतु मन की आहुति डालना अधिक कठिन होता है क्योंकि मन चंचल है। सरस्वती जी ने अपने मन की भी पूर्ण आहुति दी। उन्होंने अपना सर्वस्व प्रभु-अर्पण किया। मन और बुद्धि पूर्णतः परमात्मा को समर्पित कर दिए। इन दोनों की बलि के कारण वे काली कहलायीं। इस पुरुषार्थ में वे ब्रह्मा वत्सों में से अद्वितीय और अग्रगण थीं। इससे उनके मन, बुद्धि का संबंध पूर्णतः परमपिता परमात्मा से जुट गया और उनकी बुद्धि का मिलान परमपिता से मिल गया। इसके फलस्वरूप उन्होंने अपने परिपक्व अनुभवों के द्वारा सभी यज्ञ-वत्सों को मातृवत रूप से ज्ञान की पालना दी। इसलिए वे यज्ञ-माता कहलाईं। सभी नर-नारियों के प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भरा था इसलिए उन्हें जगदम्बा कहा गया, वरना स्थूल रूप में तो कोई भी सारे जगत की अम्बा नहीं होती।

ओम की ध्वनि करने वाली ओम-राधे, ज्ञान-वीणा वादन करने वाली सरस्वती और ज्ञान-लोरी देने वाली माता जगदम्बा सरस्वती नाम पड़ने से पहले उनका नाम राधा था। जब ओम-मंडली नाम से ज्ञान-यज्ञ का प्रारम्भ हुआ तो वहां वे ओम की ध्वनि किया करतीं। देह से न्यारा होकर वे ईश्वरीय स्मृति में ऐसे मग्न हो जातीं जो उनकी रुहानियत भरी वाणी सुनने वालों को भी देह से न्यारा कर देती और ईश्वरीय प्रेम के भाव से विभोर कर देती। तब उनमें से कुछेक को दिव्य-दृष्टि प्राप्त होती और वे श्रीकृष्ण का साक्षात्कार भी करते थे तब लोगों ने उन्हें राधा की बजाय ओम राधे का नाम दिया। उन दिनों जब कभी ब्रह्मा बाबा दूसरे नगर में चले जाते तो वहां से वे ये ज्ञान के पत्र लिखकर ओम राधे के पास भेजते थे, तब वे उन पत्रों को ही पढ़कर ज्ञान सुनाया करती थीं। उनकी वे विस्तृत व्याख्या करती थीं। सुनने वालों को ऐसा लगता था कि वे ज्ञान की लोरी दे रही हैं अथवा ज्ञान गीत सुना रही हैं और वे उन्हें माता शब्द से संबोधित करने लगे या मम्मा कहने लगे।

सदा निर्भय और निश्चिंत

मातेश्वरी जी का तपोबल उच्च स्तरीय और अलोप था। जब कभी उनके पास जाना होता था तो ऐसा महसूस होता था कि वे योग की शक्तिशाली स्टेज में स्थित होकर पवित्रता एवं दिव्यता की किरणें प्रकीर्ण कर रही हों। उनके नयन स्थिर, चेहरे पर मुस्कुराहट और मुख-मंडल दिव्य आभा को लिए हुए होते थे। वे केवल ज्ञान द्वारा ही जन-जन की सेवा नहीं करती थीं बल्कि अपने तपोबल से और अपनी स्थिति से आत्माओं में बल भरती थीं और अपनी शीतलता से आत्माओं को शीतल कर देती थीं। उनके जीवन में अनेक घटनाएं ऐसी हुईं जो भयावह एवं विकराल रूप धारण किए हुए होती थीं परंतु वे इस विविधता पूर्ण विश्व नाटक में अटल निश्चय होने के कारण सदा निश्चिंत रहती थीं। अन्यश्च, यदि बाबा ने उनको कोई ऐसा कार्य सौंप दिया जिसका उन्हें अनुभव न हो या वो बहुत कठिन हो तब भी उन्होंने कभी ऐसा नहीं कहा कि मैं इसे कैसे करूंगी? मैं तो इससे अपरिचित हूं? बल्कि उन्होंने सदा जी बाबा - ऐसा कहकर इस ज़िम्मेवारी को स्वीकार किया और उसे सम्पन्न करके दिखाया।